डिप्लोमा इन आयुर्वेद फार्मेसिस्ट (द्वितीय वर्ष)

तृतीय प्रश्न–पत्र

कुल अंक–100

रोग परिचय एवं चिकित्सा

1. व्याधि की परिभाषा, व्याधि के सामान्य कारण, व्याधि प्रकार, व्याधि अधिष्ठान, शारीरिक एवं मानसिक व्याधियां, अविकृत एवं विकृत शारीरिक वातादि दोषों के कार्य, उनके प्रकोप के कारण तथा प्रकुपितावस्था में उनके द्वारा उत्पन्न होने वाले रोगों की पृथक–पृथक संख्या।

2. निदान–शब्द का अर्थ, निवानादि पंचविध रोग विज्ञान, रोगी की स्पर्शन, दर्शन और प्रश्न द्वारा परीक्षा विधि, रोगी की नाड़ी, जिह्वा, शब्द, स्पर्श, आकृति, मल और मूत्र इन आठों की परीक्षा विधि, नाड़ी एवं श्वासंगति की परीक्षा तथा अंकन थर्मामीटर एवं स्टेथिस्कोप द्वारा रोग की सामान्य परीक्षा विधि तथा चिकित्सालय में प्रयुक्त यंत्रोपयंत्रों की प्रयोग विधि, शोधन एवं संरक्षण।

3. चिकित्सा की परिभाषा, चिकित्सा के चार पाद तथा उनके लक्षण, चिकित्सा प्रकार, के पूर्व चिकित्सक का कर्तव्य, चिकित्सक का रोगी के प्रति कर्तव्य, उपस्थाता के गुण एवं कार्य।

4. अनुपान की परिभाषा, अनुपात विधि, अनुपान की मात्रा, रोगानुसार विशेष अनुपान।

5. औषधि मात्र विधि शिशुभेषज परिमाप, औषधि सेवनकाल, भैषजमार्ग आदि।

6. स्नेहन, स्वेदन, वमन, विरोचन, निरूह्वस्ति, अनुवासन वस्ति, उत्तरवस्ति, अंजन, धूम्रपान, गण्डूस, आश्च्योतन, लंघन और बृहणादि का ज्ञान।

7. ज्वर, अतिसार, ग्रहणी, अर्थ, अग्निसांद्य, विसूचिका, कामला, रक्तपित्त, राजयक्षमा, कास, हिक्का, श्वास, अरूचि, छाद, अनिद्रा, भ्रम, मूर्च्छा, अपस्मार, विवन्ध, वातव्याधि, आमवात, शूल, गुल्म, हृदय रोग, मूत्रकृच्छ, प्रमेह, शोध, पूयमेह, उपदंश, ददु, पामा, विस्फोट, प्लेग, मुखरोग, कणरोग, प्रतिश्याय, शिरोरोग, नेत्ररोग, प्रदर, सूतिका रोग, बालकों का कूकर कास एवं पसलीके रोगों के सामान्य लक्षण तथा सामान्य चिकित्सा विधि, घरेलु उपचार एवं पथ्यापथ्य प्रकार।

8. जीवाणु एवं संक्रमण रोगों का सामान्य परिचय, रोग क्षमता एवं उनको उत्पन्न करने के कृत्रिम साधन।

9. आयुर्वेद चिकित्सा के सामान्य सिद्धान्तों का ज्ञान।

आक्रोच्च ग्रन्थ–

1. भाव प्रकाश
2. शारंगधर संहिता।
3. चिकित्सा हस्तोमलय–राजेश्वरदत्त शास्त्री।